प्रेमचंद के कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ.अमित कुमार शर्मा

प्रस्तावन

राष्ट्रीयता एक विशेष प्रकार का भाव है जिसमें मनुष्य अपने नैतिक मूल्यों को स्थापित करता है। उन मूल्यों में हिंसा, घृणा, सांप्रदायिकता, विश्वासघात जैसी भावनाओं का कोई स्थान नहीं होता है। यहां पर सिर्फ बंधुत्व, सद्भावना, प्रेम, और शांति का उन्मुक्त आकाश होता है।

दरअसल राष्ट्रीयता सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक चेतना का केंद्र बिंदु रहा है। सांस्कृतिक आंदोलनों ने वेद और उपनिषद की नवीन व्याख्या की तथा संस्कृति के प्रति रागत्मक मोह जगाया। सांस्कृतिक चेतना ने भारत की राष्ट्रीय चेतना को पूरा बल दिया। इस सांस्कृतिक चेतना को जगाने में आचार्य विष्णुगुप्त की परंपरा के साथ-साथ आचार्य शंकराचार्य एवं स्वामी विवेकानंद की एक लंबी परंपरा है जिसने भारतीय राष्ट्रीय चेतना को एक नया बल दिया।

बीज-शब्द : राष्ट्रीयता, साहित्य, राष्ट्र, आंदोलन, संस्कृति, समाज, साम्राज्यवाद।

साहित्य के अंतर्गत राष्ट्रीयता एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसमें राष्ट्र को नई ऊंचाई प्रदान करने के साथ-साथ सही दिशा निर्देशन का सामर्थ्य भी अंतर्निहित हो। प्रेमचंद आधुनिक भारत में राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि साहित्यकार है उन्होंने लगभग एक दर्जन उपन्यास के साथ-साथ तीन सौ से अधिक कहानियों की रचना की। यह वही समय है जब भारत पर अंग्रेजों का अत्याचार बढ़ता जा रहा था। दुनिया एक नए विश्व युद्ध के विस्फोट पर खड़ी हो रही थी। ऐसी परिस्थितियों के बीच प्रेमचंद की पहली कहानी संग्रह 'सोजेवतन' का प्रकाशन होता है। इस कहानी-संग्रह ने भारतीय जन आंदोलनों को एक नई उर्जा प्रदान की, जिससे अंग्रेजी हुकूमत ने इस पुस्तक पर प्रतिबंध लगा दिया। इस संदर्भ में श्री रघुपति सहाय 'फिराक' के अनुसार- **'**सोजे वतन की **500** प्रतियों में प्रेमचंद को आग लगा देने पर मजबूर किया गया। दुनिया भर में जनतंत्र की हिफाजत का ठेका लेने वाले अंग्रेजों ने इस तरह भारतीय जनता के सबसे बड़े लेखक की रचनाओं का स्वागत किया।**'** 1

प्रेमचंद की पहली कहानी संग्रह 'सोजे वतन'2 की भूमिका से स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचंद अपने साहित्यिक जीवन के प्रारंभ में ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा साहित्य को एक कर अपनी भूमिका स्पष्ट कर देते हैं। निश्चित रूप से प्रेमचंद एक प्रतिबद्ध लेखक के साथ-साथ दासता के खिलाफ लड़ने वाले प्रहरी भी है। प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में अन्याय,अत्याचार के खिलाफ लगातार संघर्ष किया। उनका यह संघर्ष साहित्यिक जीवन के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन में भी बना रहा।

इस घटना के बाद प्रेमचंद ने अपना नाम नवाबराय का परित्याग कर दिया और प्रेमचंद नाम से साहित्यिक जीवन की शुरुआत की। प्रेमचंद अपने नए नाम के साथ कभी समझौता नहीं किए और ब्रिटिश शासकों के प्रति अभिव्यक्त का भाव हमेशा तलाशते रहे, जिसकी उत्पत्ति प्रेमाश्रम और उसके बाद के उपन्यासों में देखा जा सकता है। प्रेमचंद का राष्ट्रप्रेम अब सिर्फ देश की आजादी तक सिमट कर नहीं रह गया था बल्कि ब्रिटिश शासन की शोषण नीति से पैदा हुई किसानों, मजदूरों की दयनीय जीवन स्थिति का चित्रण करना भी था। यही कारण है कि प्रेमचंद के साहित्य में स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन आदि आंदोलनों का चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद साहित्य में जिस समय उदित होते हैं उस समय तक ब्रिटिश साम्राज्य का झंडा भारत में पूरी तरह फैल चुका होता है। भारत में लंबे समय से इस्लामी एवं साम्राज्यवादी शासन के दौर में हुए पारंपरिक, सांस्कृतिक मूल्यों, रीति-रिवाज में विघटन के कारण समस्या बढ़ती गई। प्रेमचंद उर्दू भाषा में

लेखन प्रारंभ करने के बाद हिंदी की तरफ मुड़े। अर्थात वे हिंदी और उर्दू कथा साहित्य के प्रारंभिक प्रभावशाली कथा लेखकों में से एक थे। जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना की लहर को यहां की बहुसंख्यक जनता के जीवन पद्धति से जोड़ दिया। पहले से ही चली आ रही पौराणिक कथा, किस्सागोई की परंपरा को प्रेमचंद ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के भावों से जोड़ दिया। जो ग्रामीण भारत के राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का नेतृत्व कर रहे थे।

प्रेमचंद हमारे कथा साहित्य के विरले महामानव है। अगर यहां कहां जाए कि प्रेमचंद का संपूर्ण कथा साहित्य राष्ट्रीय आंदोलन की गर्भ से उपजा है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। 'सोजे वतन' से लेकर 'गोदान' तक की साहित्यिक यात्रा में प्रेमचंद ग्रामीण भारत के संघर्ष उसकी आत्मा, दर्द-पीड़ा, पराजय, सुख-दुख के साथ संपूर्णता एवं व्यापकता के साथ दिखाई पड़ते है। 1936 लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ की अध्यक्षता करते हुए प्रेमचंद साहित्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि- वह साहित्य देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई ही नहीं बल्कि उसके आगे मसाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।"3 अर्थात प्रेमचंद जिस मसाल की बात करते हैं उस मसाल का संबंध ग्रामीण भारत के बहुसंख्यक जनता से है जो उस समय दो-दो स्तरों पर संघर्ष कर रहा था। इसमें पहला संघर्ष भारतीय संस्कृति की रक्षा करना और दूसरा साहित्य के माध्यम से राजनीति को सही मार्ग दिखाना था।

हजारों वर्षों से गुलामी का दंस झेल रहे भारतीयों के अंदर अपनी मातृभूमि, अपनी परंपरा, अपनी संस्कृति की रक्षा की जो दबी हुई इच्छा थी उसे प्रेमचंद ने पुनः जागृत कर दिया। प्रेमचंद के चिंतन के केंद्र में भारतीयता है, जिसका आधार भारतीय संस्कृति की गतिशीलता और मनुष्य के जीवन का यथार्थ चित्रण है। यही कारण है कि प्रेमचंद किसी भी दिखावे के विरुद्ध न सिर्फ खड़े दिखाई पड़ते हैं बल्कि जीवन का यथार्थ चित्रण भी कर पाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनके कथा साहित्य का पात्र एक तरफ जहां रानी सारन्धा, हरदैल, आल्हा आदि साहसी नायक है, जो अपनी मातृभूमि के लिए आत्म बलिदान देने से भी नहीं हिचकते। वहीं दूसरी तरफ ग्रामीण भारत के सुदूर गांव का साधारण किसान, मजदूर, दलित, शोषित है, जो शोषण के विरुद्ध संघर्ष और संघर्ष के उपरांत शांति के माध्यम से सामाजिक ताना-बाना बेहतर बनाते हुए दिखाई पड़ता हैं। यही त्याग और संघर्ष में शांति का उद्देश्य भारतीय संस्कृति का मूल है यही कारण है कि प्रेमचंद का साहित्य राजनीति के पीछे चलने के बजाय मसाल लेकर आगे आगे चलने वाला है। प्रेमचंद के राष्ट्रीय चेतना पर चर्चा करते हुए प्रेमचंद विरासत का सवाल पुस्तक में शिवकुमार मिश्र लिखते हैं लिखते हैं- "प्रेमचंद का साहित्य विश्व की मुक्तिकामी जनता की अदालत में भारत में अंग्रेजी राज की एक ऐसी फर्द जुर्म है जिसकी भारतीय साहित्य में कोई मिसाल नहीं है, वह भारत में अंग्रेजी राज की कटुतम आलोचना है।"4

1857 के स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीय एकता के अभाव में जहां पराजय मिलती है वहीं दूसरी तरफ भारत में अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए भारतीय कच्चे माल से इंग्लैंड में बने वस्तुओं को ब्रिटिश व्यापारियों एवं उद्योगपतियों के माध्यम से अंग्रेज भारतीय बाजार को अपना शिकारगाह बना लेते हैं। इतना ही नहीं पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था का प्रचार प्रसार तेजी से करते हैं जिससे कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था तहस-नहस हो जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था का भारतीय संस्कृति पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। भारतीय समाज में व्याप्त विकृतियों को लेकर 18वीं शताब्दी में व्यापक पैमाने पर सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सुधार का आंदोलन चलाया जाता है। राजा राममोहन राय से प्रारंभ हुई है सुधार व्यवस्था पूरे भारत में फैलती है। इस्लामिक एवं साम्राज्यवादी शासन के लंबे दौर में हुए भारतीय मूल्यों, रीति-रिवाज के हास के कारण नैतिक मूल्यों, आदर्शों का लगातार क्षरण होता गया। इसके कारण समाज में धार्मिक रूढ़िया, जातिवाद, छुआ-छूत, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह एवं औरतों के अधिकारों का हनन का चलन समाज में बढ़ने लगा। इसी समय राजारामोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना करके भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों एवं संकीर्णतावादी

सोच को चुनौती देते हैं। राजा राममोहन राय के इस कार्य को आगे बढ़ाने वालों में केशवचंद्र सेन, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, आदि रहे। भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को न सिर्फ इन समाज सुधारकों ने चुनौती दी, बल्कि उसका बहुत हद तक परिष्कार भी किया। भारतीय समाज एवं संस्कृति को एक तरफ जहां परिष्कृत किया जा रहा था। वहीं राजनीतिक स्तर पर 18वीं शदी के अंत तक आते-आते कांग्रेस दो विचारधाराओं में विभाजित हो जाती है। इसमें एक गरम दल जिसका नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक कर रहे होते हैं। इस दल में विपिन चंद्रपाल, लाला लाजपत राय आदि स्वतंत्रता सेनानी होते हैं, तो वहीं दूसरी ओर नरम दल था। गरम दल के नेता ब्रिटिश सत्ता से विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और सीधा संघर्ष का रास्ता अपनाते हैं और यही विदेशी बहिष्कार आगे चलकर स्वदेशी आंदोलन का आधार बनता है।

प्रेमचंद के कथा साहित्य को राष्ट्रीय आंदोलन की कसौटी पर रखें तो इसे विभिन्न चरणों से होकर गुजरना पड़ता है। पहला चरण भारतीय संस्कृति की रक्षा, दूसरा स्वदेशी आंदोलन और तीसरा चरण जनआंदोलन। प्रेमचंद के कथा-साहित्य को राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में हमने इन मापदंडों की कसौटी पर कसकर चित्रण करने की कोशिश की है।

भारतीय संस्कृति की रक्षा

प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति के समृद्धि का चित्रण अनेकों कहानियों एवं उपन्यासों में किया है। प्रेमचंद के कथा साहित्य की परिधि में भारत का ग्रामीण परिवेश अपने यथार्थ रूप में विद्यमान है। प्रेमचंद का साहित्य तत्कालीन समाज और संस्कृति से न सिर्फ अवगत कराता है बल्कि ग्रामीण जीवन एवं भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था जागृत करने वाला सर्वाधिक सशक्त माध्यम भी है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि प्रेमचंद अपने परिवेश से पूर्णतः रूबरू थे। यही कारण हैं कि भारतीय संस्कृति जैसे- पर्व त्यौहार, पूजा पाठ, आराधना, भक्ति, तीर्थाटन, गंगा-स्नान आदि का अपने साहित्य में यथार्थ रूप में चित्रण किया है। 'आंसुओं की होली' कहानी में प्रेमचंद होली के दिन का वर्णन करते हुए कहते हैं- "होली का दिन है। बाहर हाहाकार मचा हुआ है। पुराने जमाने में अबीर और गुलाल के सिवा और कोई रंग न खेला जाता था। अब नीले, हरे, काले सभी रंगों का मेल हो गया है और इस संगठन से बचना आदमी के लिए तो संभव नहीं। हां। देवता बचें। सिलबिल के दोनों साले मुहल्ले भरके मर्दों, औरतों, बच्चों और बूढ़ों के निशान बने हुए थे। बाहर के दीवान-खाने के फर्श, दीवारें-यहां तक कि तस्वीरें भी रंग उठी थीं। घर में भी यहीं हाल था। मुहल्ले की ननदें भला कब मानने लगी थीं। परनाला तक रंगीन हो गया था।"5

इसी तरह प्रेम की होली कहानी के मैकू महतो के गांव में दूसरे गांव के लोग होली खेलने आते हैं। मैकू महतो आने वाले लोगों के लिए खाने-पीने का विशेष प्रकार का प्रबंध करता है। सभी मस्त है अवसर पाकर नौकर चाकर शराब पीते हैं इनमें से कोई फाग गाता है, कोई चौताल, कोई गाली-गलौज करता है। इसी तरह प्रेमचंद 'विध्वंस' कहानी में चैत्र संक्रांति के पर्व का वर्णन मिलता है। चैत मास में रब्बी की फसल की कटाई के बाद गेहूं, जौ, चना, मटर, मसूर, अरहर आदि अन्य तैयार हो जाते हैं अर्थात नए अन्न तैयार होने की खुशी में लोग घरों में आग नहीं जलाते और उस दिन अन्न का सत्तू खाया और दान किया जाता है। शांति कहानी की श्याम जन्माष्टमी का त्यौहार मनाती है। इसी तरह भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में तीज, दशहरा, रामलीला, नाग पूजा, दीपावली, श्री सत्यनारायण व्रत, इंद्र की आराधना, शिव की आराधना, हनुमान जी की आराधना, गंगा स्नान, यमुना स्नान, तीर्थ यात्रा आदि प्रेमचंद के उद्धार, अलग्योझा, बड़े घर की बेटी, चकमा, आदि कहानियों में मिलता है। यही नहीं प्रेमचंद के उपन्यासों में भी भारतीय संस्कृति का चित्रण दिखाई पड़ता है। प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास गोदान में भारतीय संस्कृति प्रतिनिधि पात्र के रूप में उपस्थित है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र होरी कृषि संस्कृति का वाहक है। होरी के जीवन

का आधार कृषि और गऊ है। होरी पूरा जीवन अपने जीवन संघर्ष से लड़ता है जहां उसे राय साहब जैसे सामंतवादी व्यवस्था के प्रतिनिधि पत्रों से सहानुभूति तो मिलती है किंतु किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती। होरी जो एक किसान होता है आर्थिक तंगी ने धीरे-धीरे उसे किसान से मजदूर बना देता है जहां उसकी मृत्यु हो जाती है। किसान से मजदूर बनने की यह दारूण गाथा होरी को अपनी बेटी रूपा की शादी की चिंता से भी होकर गुजरना पड़ता है। एक किसान के लिए उसकी जमीन और दरवाजे पर बधी गाय सिर्फ संपत्ति नहीं, बल्कि श्रद्धा और भक्ति की वस्तु भी होती है और वही उसकी मरजाद की सीमा भी। भारत का ग्रामीण किसान इहलोक और परलोक दोनों को बचाने में दिन रात लगा रहता है। होरी इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। उपन्यास में जगह-जगह ग्रामीण जीवन की झलकियां दिखाई पड़ती है। इसमें लोक संस्कृति एवं ग्रामीण जीवन के सभी उत्सवों आदि को विशेष स्थान दिया गया है। इस संदर्भ में गोदान में प्रेमचंद लिखते हैं कि- "देहातों में साल के छः: महीने किसी न किसी उत्सव में ढोल, मंजीरा बजता रहता है। होली के एक महीना पहले से एक महीना बाद फाग उड़ती है, आषाढ़ लगते ही आल्हा शुरू हो जाता है और सावन-भादों में काजलियां होती हैं। काजलियों के बाद रामायण गान होने लगता है। सेमरी भी अपवाद नहीं है। महाजन की धमकियां और कारिंदे की बोलियां इस समारोह में बाधा नहीं डाल सकती।"**6**

हालांकि निर्मल वर्मा प्रेमचंद के इस बात से सहमत नहीं है और लिखते हैं- "प्रेमचंद ने भारतीय किसानों की ऐतिहासिक विकृति को देखा था-किंतु उस चीज का मूल सांस्कृतिक टेक्सचर अपने गैर-ऐतिहासिक रूप में क्या था, जो विकृत हुआ था, उसकी अंतर्दृष्टि प्रेमचंद में नहीं मिलती। प्रेमचंद अक्सर उस पक्ष को अनदेखा कर देते हैं, जिसमें भारतीय किसान की सांस्कृतिक विरासत छिपी थी। यह विरासत उसके व्यवहारिक सामाजिक धर्म से कहीं ज्यादा गहरी और महत्वपूर्ण थी। एक शब्द में कहे, तो उसकी आध्यात्मिक विरासत।"**7** निश्चित रूप से निर्मल वर्मा का यह प्रश्न महत्वपूर्ण बन जाता है, इसी तरह सेवा सदन उपन्यास में समाज के उच्च वर्ग द्वारा अपनाई जाने वाली ढोंग का पर्दाफाश करते हैं। वहीं निर्मला उपन्यास में सुधा जैसे पत्रों को भी आड़े हाथों लेते हैं। रंगभूमि उपन्यास का सूरदास, की निडरता और दृढ़ साहस के आगे सामंतवादी संस्कारों से पोषित उच्च वर्ग पर करारा प्रहार करते हैं, जो जाति, धर्म, संप्रदाय, अंधविश्वास, के नाम पर धर्म को आधार बनाते हैं। यहां यह बात कहना जरूरी हो जाता है कि प्रेमचंद के यहां भारतीय संस्कृति की उन पक्षों की अनदेखी की गई है जो ग्रामीण भारत की समाज व्यवस्था को एक करने एवं उनकी सामाजिक ताना-बाना को व्यवस्थित चलाने में सहायक रहे। निश्चित रूप से प्रेमचंद ने जिस विघटित और आडंबर युक्त पक्षों को दिखाने की कोशिश की है वह भारतीय समाज में था किंतु इसका मतलब यह नहीं की भारतीय संस्कृति इसी रूप में चली आ रही थी। इसके बावजूद भारत की लोक परंपरा और ग्रामीण जीवन का सजीव चित्रण देखना है तो प्रेमचंद के कथा साहित्य से होकर गुजरना पड़ेगा। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन भारतीय समाजिक जीवन और उसके सांस्कृतिक पक्ष पूरी तरह दिखाई पड़ता है।

अर्थात यह बिल्कुल नहीं की प्रेमचंद ने सिर्फ सांस्कृतिक विरासत की चली आ रही परंपरा का ज्यों का त्यों चित्रण कर दिया है, बल्कि मैं तो यह कहता हूं कि प्रेमचंद ने भारतीय समाज में अंधविश्वास, मिथ्या रस्म-रिवाजों से मुक्त होना, नशे से परहेज करना, दहेज प्रथा आदि का उसके वास्तविक स्वरूप को चित्रित कर भारतीय समाज पर उपकार किया है। और सही रूप में इसकी व्याख्या की जाए तो कहना पड़ेगा कि चाहे राष्ट्रीय आंदोलन का चित्रण हो या किसानों का चित्रण इनसे बड़ा उपकार प्रेमचंद का इन अंधविश्वासों, धार्मिक और रुढ़िवादी परंपरा से मुक्ति कराना उनकी सबसे बड़ी वैचारिक आंदोलन थी।

स्वदेशी आंदोलन

सन 1905 भारतीय राजनीति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष था। इस वर्ष भारतीय जनमानस के तमाम विरोध के बाद भी तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन ने बंग भंग योजना पारित कर दिया। इसका परिणाम

यह हुआ कि भारतीय जनमानस में विरोध की ज्वाला धधक उठी। सन 1907 में सूरत में हुए कांग्रेस अधिवेशन में इसका प्रभाव दिखाई पड़ता है। कांग्रेस नरम दल और गरम दल में विभाजित हो गई। गरम दल द्वारा स्वदेशी आंदोलन के साथ-साथ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को भारतीय जनमानस से अपार समर्थन मिला। स्वदेशी आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार करना जिसमें कपड़े से लेकर नमक तक चीनी से शराब तक। इस आंदोलन का दूसरा उद्देश्य स्वदेशी वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग करना। तीसरा उद्देश्य स्वराज की दिशा में कदम बढ़ाना। महाराष्ट्र से एक तरफ बाल गंगाधर तिलक स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है का नारा दे रहे थे, तो वहीं बंगाल से रविंद्र नाथ टैगोर आमर सोनार बागला गीत के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन को मजबूत कर रहे थे। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एक ऐसा जन आंदोलन बन गया, जिस पर कोई रोक नहीं लगाई जा सकती। कारण कि इस आंदोलन का अस्त्र-शस्त्र मूक एवं शांति था। इस पर से भी यह की विदेशी वस्तुओं का होली जालना रोजमर्रा की बातें हो गई। निश्चित रूप से इसका प्रभाव तत्कालीन भारतीय साहित्य पर पड़ा। प्रेमचंद स्वदेशी आंदोलन का स्वागत गर्मजोशी से करते हैं। इसका परिणाम प्रेमचंद की कथा साहित्य में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार एवं स्वदेशी आंदोलन के चित्रण जैसे सुहाग की साड़ी, चकमा, मैकू, होली का उपहार, आहुति, तावान, दीक्षा, दुस्साहस, शराब की दुकान आदि कहानियों में मिलती है। सुहाग की साड़ी कहानी में लिखते हैं- "विदेशी कपड़ों की होलियां जलाई जा रही थीं। स्वयं सेवकों के जत्थे भिखारियों की भांति द्वारों पर खड़े हो-हो कर विलायती कपड़ों की भिक्षा मांगते थे और ऐसा कदाचित ही कोई द्वारा था जहां उन्हें निराश होना पड़ता हो। खद्दर और गाढ़े के दिन फिर गए थे।"8

विदेशी वस्त्रों को जलाकर मनाई जा रही होली में सभी वर्गों के लोग भाग लेते हैं। कहानी का नायक कुंवर रतनसिंह के यहां काम कर रहे रामटहल और महरी केसर ने भी अपने विदेशी वस्त्र स्वयंसेवकों को दे देते है। यह देखकर कुंवर रतनसिंह की पत्नी को ग्लानि होती है और अंत में अपनी विदेशी सुहाग की साड़ी को होली में जलाने के लिए दे देती है। यहां देखना जरूरी हो जाता है कि भारतीय स्त्रियों के लिए सुहाग से बड़ा कुछ नहीं होता। और ऐसी लोक में मान्यताएं थी कि जिस सुहाग की साड़ी में लड़की की विदाई होती है उसी सड़ी में मृत्यु के बाद उसे अंतिम विदाई दी जाती है। अर्थात् सुहाग का संबंध पति से होता है और उसी तरह वह साड़ी पति की लंबी उम्र से अपने आप जुड़ जाता है। प्रेमचंद इसके माध्यम से यह दिखाना चाहते हैं कि इस आंदोलन में जितना पुरुष का योगदान है उससे कम स्त्रियों का भी नहीं। प्रेमचंद इस आंदोलन के दूसरे पक्ष पर भी ध्यान देते हैं वह यह कि कुछ लोग व्यक्तिगत लोभ के कारण विदेशी वस्तुओं का उपभोग कर गर्व महसूस करते हैं। पत्नी से पति कहानी के पात्र सेठ दीनानाथ इसी श्रेणी के पात्रों का प्रतिनिधि करते हैं। सेठ दीनानाथ के संबंध में इस कहानी में प्रेमचंद लिखते हैं- "मिस्टर सेठ ने विलायती टूथ पाउडर विलायती ब्रुश से दांतों पर मला,विलायती साबुन से नहाया, विलायती चाय विलायती प्यालियों में पी, विलायती बिस्किट विलायती मक्खन के साथ खाया, विलायती दूध पिया। फिर विलायती सूट धारण करके विलायती सिगार मुंह में दबाकर घर से निकले, और अपनी मोटरसाइकिल पर बैठ फ्लावर शो देखने चले गये।"9

सेठ दीनानाथ स्वयं तो विदेशी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। अपनी पत्नी गोदावरी को भी विदेशी वस्तुओं का उपयोग करने के लिए विवश करते हैं। गोदावरी जब घर की बालकनी से अन्य स्त्रियों को खद्दर की साड़ी पहने देखतीं है तो उसका मन विदेशी पन से घृणा करने लगती है। वह कहती है- "सरकार ने इनसे कब कहा है कि देसी चीजें ना खरीदों। इससे विदित होता है कि सरकार देसी चीजों का निषेध नहीं करती, फिर भी यह महाशय सुर्खरु बनने की फिक्र में सरकार से भी दो अंगूल आगे बढ़ना चाहते हैं।"10 यहां तक की गोदावरी इस आंदोलन में भाग लेना चाहती है लेकिन सेठ के कारण वह फड़फड़ती रहती है।

प्रेमचंद की चकमा कहानी का मुख्य पात्र लाला चंदूमल है। इस कहानी में प्रेमचंद लाल चंदूमल की धूर्तता तथा और उसकी अनैतिक सोच का पर्दाफाश किया है। शहर में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार होने के

बावजूद सेठ चंदूमल न सिर्फ विदेशी वस्त्रों को बेचता है बल्कि वह कांग्रेस के शपथ पत्र पर हस्ताक्षर करने से भी इंकार कर देता है। वालंटियर द्वारा दुकान के सामने खड़े होने के बाद से चंदूमल की बिक्री कम हो जाती है। एक तरफ चंदूमल पुलिस का सहयोगी होता है तो दूसरी ओर वह चाहता है कि वालंटियर दुकान के सामने से हट जाए। जैसे ही पुलिस वालंटियर को मारती है जनता में आक्रोश फैल जाता है। गिरफ्तारियां होती है। बाद में सेठ चंदूमल पुलिस का गवाह बनने से इनकार कर देता है। कांग्रेस में यह खबर फैल जाती है कि अब वह देशभक्त बन चुका है। अब उसकी दुकान के सामने से स्वयंसेवकों का पहरा हट जाता है। इस प्रकार लाला अपने चालों में सफल हो जाता है। अपने मुनीम से कहता है कि-वह डाल-डाल चलेंगे तो मैं पात-पात चलूंगा। विलायती कपड़े की गांठ निकलवाइए और व्यापारियों को देना शुरू कीजिए।"11

इसी तरह होली का उपहार कहानी का पात्र अमरकांत होली के अवसर पर अपनी पत्नी सुखदा को साड़ी उपहार में देना चाहता है वह हाशिम की दुकान से विदेशी साड़ी खरीद कर पीछे के दरवाजे से निकलता है कि तभी वॉलिंटियर पकड़ लेते हैं साड़ी पर हाथ रखते हुए वालंटियर कहते हैं- "बिल्लाती कपड़ा ले जाएं का हुक्म नहीं न। बुलाइत है, तो सुनत नाही हौ।"12

कई स्वयंसेवक उन्हें समझाते हैं कि वे विदेशी कपड़ा न ले जाएं, किंतु अमरकांत हठ करता हैं। परिणाम यह होता है कि कई स्वयंसेवक उनके सामने लेट जाते हैं, तो कई टिप्पणियां करने लगते हैं। सुखदा जो स्वयं भी स्वयंसेवक है वह सभी को शांत रहने को कहती है। जैसे ही अमरकांत को पता चलता है की सुखद ही उसकी पत्नी है वह लज्जित हो जाता है। उसके सामने साड़ी में आग लगा देता है। स्वयं भी स्वयंसेवक सेवक बनता है जहां उसे जेल हो जाती है।

यहां यह कहना जरूरी हो जाता है की कहानी बहुत छोटी और सामान है। किंतु प्रेमचंद की दृष्टि में स्वदेशी आंदोलन कितना महत्वपूर्ण है इसका पता इस कहानी से चलता है। जिस व्यक्ति की नई-नई शादी हुई हो। वह पहली बार ससुराल जा रहा हो जहां उसकी पत्नी स्वयं सेवक बनाकर उसे रास्ते मिलती हो। यह सिर्फ संयोग नहीं है बल्कि प्रेमचंद के पात्र कहीं न कहीं इस रूप में जीते हुए दिखाई पड़ते हैं। अर्थात दांपत्य जीवन का प्रथम चरण जहां व्यक्ति अपने जीवन को आनंदमय बनाने की कोशिश करता है वहां प्रेमचंद उसे त्याग बलिदान में परिवर्तित करते हैं हो सकता है अमरकांत वापस लौटकर कभी न आए, किंतु सुखदा अमरकांत को पुलिस की गाड़ी में बैठे देख गौरवान्वित महसूस करती है यहीं त्याग और बलिदान आगे चलकर प्रत्येक जन के जीवन का आंदोलन बन जाता है।

तावान कहानी में भी विलायती कपड़ों के खिलाफ स्वदेशी आंदोलन का चित्रण किया गया है। कहानी का नायक छकौड़ीलाल की पत्नी बीमार रहती है। चिकित्सा के लिए रुपए का प्रबंध न होने के कारण मजबूरन कांग्रेस द्वारा लगाया गया कपड़ों के बंडलों पर मुहर को तोड़ देता है। इस अपराध में उस पर सौ रुपए का तावान लगाया जाता है। प्रेमचंद यहां यह बताते हैं कि व्यापार करने वाला हर व्यापारी यह जरूरी नहीं कि वह संपन्न नहीं हो। इसके बावजूद देशहित में व्यक्तिगत लाचारी और सुख कोई महत्व नहीं रखता। छकौड़ीलाल की पत्नी स्वाभिमानी है। वह अपने पति से कहती भी है- "और कुछ नहीं है, घर तो है। इसे रेहन रख दो। और अब विलायती कपड़े भूल कर भी न बेचना। सड़ जाए, कोई परवाह नहीं। तुमने सील तोड़कर यह आफत सिर ली। मेरी दवा दारू की चिंता न करो। ईश्वर की जो इच्छा होगी, वह होगा। बाल बच्चे भूखों मरते हैं, मरने दो। देश में करोड़ों आदमी ऐसे हैं, जिनकी दशा, हमारी दशा से भी खराब है। हम न रहेंगे, देश तो सुखी होगा।"13

स्वदेशी आंदोलन में भाग लेने वाले तमाम स्वयंसेवी और उनकी सहायता करने वाला कोई भी व्यक्ति सलाखों के भीतर डाल दिए जाते थे। आहुति कहानी का विश्वंभर रानीगंज में स्वदेशी का प्रचार करता हुआ गिरफ्तार कर लिया जाता है। वैसे भी प्रेमचंद स्वदेशी आंदोलन के प्रति जनता के विभिन्न वर्गों और समूहों की प्रतिक्रिया, हानि लाभ आदि को बड़े ही नजदीक से देखते हैं। गोदान उपन्यास की मिस मालती

बिजली दैनिक पत्र के यशस्वी संपादक ओंकारनाथ जो खाद्दर पहनकर राष्ट्रवादी होने का दिखावा करते हैं, से पूछता है- “तो आपके पत्र में विदेशी वस्तुओं के विज्ञापन क्यों होते हैं? मैं किसी भी दूसरे पत्र में इतने विदेशी विज्ञापन नहीं देखें। आप तो है आदर्शवादी और सिद्धांतवादी, पर अपने फायदे के लिए देश का धन विदेश भेजते हुए आपको जरा भी खेद नहीं होता।”14

इन कहानियों से स्पष्ट होता है कि स्वयंसेवक घर-घर से विलायती वस्त्रों को इकट्ठा करके उसकी होली जलाते हैं। परंतु समाज में कुछ ऐसे भी लोग थे जो इस आंदोलन का मजाक उड़ाते थे। सोचने वाली बात है कि स्वदेशी आंदोलन जो बिल्कुल विनम्र और शांत आंदोलन था किस प्रकार भारत के बहुत बड़े समूह का हिस्सा बन गया।

जनआंदोलन

सन 1920 आते-आते भारत में महत्वपूर्ण घटनाएं घट चुकी होती हैं। 1915 में गांधी जी का भारत आगमन के उपरांत पूरे भारत का भ्रमण करना। 1917 में चंपारण के किसानों का गांधी जी को आमंत्रित करना, तत्पश्चात नील की खेती के खिलाफ सामान्य लोगों का एक होकर विद्रोह करना, जलियांवाला बाग में शांतिपूर्ण एकत्रित लोगों पर अंधाधुंध गोली चलवाना। आदि घटनाएं जनता के मन में आक्रोश भर दिया। परिणाम यह होता है कि यह आक्रोश जन आंदोलन के रूप में परिवर्तित होता है। जहां सन 1920 में गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन की बिगुल फूंक दिया जाता हैं। धीरे-धीरे आम जनमानस इस संघर्ष में जुड़ती गई। इस जन आंदोलन में गांव के स्त्री पुरुष समाज की हिस्सेदारी बराबर रही। उग्र होते जन आंदोलन ने कांग्रेस नेतृत्व के हाथ-पांव फुल दिए। सन 1922 में हुए चौरी-चौरा कांड की घटना के कारण गांधी जी ने अहिंसा की बात कह कर आंदोलन वापस ले लिया। इस जन आंदोलन का महत्व इस बात में है कि एक तरफ आम जन मानस स्वाधीनता की लड़ाई में जुड़ता गया तो वहीं दूसरी तरफ साहित्यकार इस घटना से प्रेरित होते हुए अपनी साहित्य की धारा राष्ट्रीय आंदोलन की तरफ मोड़ दिए। अर्थात् भारत का प्रत्येक व्यक्ति इस जन आंदोलन में अपनी आहुति देने के लिए निकल पड़ा। प्रेमचंद के कथा साहित्य पर इन जन आंदोलनों का व्यापक प्रभाव पड़ा। जलियांवाला के नरसंहार के बाद मुंशी प्रेमचंद ने अपना इस्तीफा दे दिया। उनका विश्वास था कि अंग्रेज अहिंसा के नैतिक अस्त्र से ही देश छोड़कर जाएंगे। रंगभूमिका सूरदास अंत में कहता है- “हम हारे तो क्या, मैदान से भागे तो नहीं, धांधली तो नहीं की। फिर खेलेंगे, जरा दम ले लेने दो, हार-हारकर तुम्हीं से खेलना सीखेंगे और एक न एक दिन हमारी जीत होगी, जरुर होगी।”15

आजादी की लड़ाई में अपने अद्भुत साहस और त्याग का प्रदर्शन करने वाला सूरदास उपन्यास का प्रमुख पात्र है। सूरदास राष्ट्रीय आंदोलन के रंग मंच पर आदर्श और यथार्थ का मिश्रण है।

प्रेमचंद भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के अग्रणीय कथाकार थे। इसकी अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में दिखाई पड़ती है। राष्ट्रीयता का जो स्वर सोजे वतन कहानी से शुरू होती है वह अनेक धाराओं से होते हुए 'उपदेश', 'कातिल की मां', आहुति, कातिल, रानी सारन्धा, राजा हरदौल, विक्रमादित्य, चकमा, मां, अनुभव, कुत्सा, रियासत का दीवान, विश्वास, लाग-डाट, जेल, शराब की दुकान, समय-यात्रा, दुस्साहस, जुलूस, मैकू, सुहाग की साड़ी आदि कहानियों में मिलती है। कुछ कहानियों के पात्र तो वास्तविक जीवन के स्वतंत्रता सेनानी है जिन्हें प्रेमचंद ने अलग-अलग घटनाओं का विषय बनाया है। मां कहानी की नायिका करुणा का पति आदित्य स्वतंत्रता सेनानी है जहां उसे तीन वर्ष की सजा होती है। जेल में अत्यधिक प्रताड़ना के कारण सील रोग से उसकी मृत्यु हो जाती है। करुणा अपने बेटे प्रकाश स्वतंत्रता सेनानी बनाना चाहती है किंतु वह मजिस्ट्रेट बनना चाहता है। करुणा की नजर में मजिस्ट्रेट शब्द राष्ट्रवादियों के लिए अभिशाप है। वह कहती है- “सरकार की पहली नीतियह है कि वह दिन-दिन अधिक संगठित और दृढ़ हो-इसके लिए स्वाधीनता के भावों का दमन करना जरूरी है! अगर कोई मजिस्ट्रेट इस

नीति के विरुद्ध काम करता है तो वह मजिस्ट्रेट ना रहेगा। वह हिंदुस्तानी मजिस्ट्रेट ही था जिसने तुम्हारे बाबूजी को जरा सी बात पर तीन साल की सजा दे दी।"16

समर- यात्रा कहानी में अंग्रेजी राज से लड़ने वाली जनता का उत्साह और त्याग दिखलाया गया है इस कहानी का पात्र एक अंधा लड़का जो खंजरी बजा बजाकर राष्ट्रीय आंदोलन के लिए चंदा इकट्ठा करता है। एक अन्य पात्र मैकू आजादी की लड़ाई को अपनी लड़ाई समझता है और कहता है - "बड़े आदमी क्यों जुलूस में आने लगे, उन्हें इस राज्य में कौन आराम नहीं है। मर तो हम लोग रहे हैं, जिन्हें रोटियों का ठिकाना नहीं। इस बखत कोई टेनिस खेलता होगा, कोई चाय पीता होगा, कोई ग्रामोफोन लिए गाना सुनता होगा, कोई पारिक की सैर करता होगा, यहां आए पुलिस के कोड़े खाने के लिए, तुमने भी खूब कही।"17

प्रेमचंद का समय राष्ट्रीय आंदोलन की अभिव्यक्ति थी। इसकी झलक 1932 में प्रकाशित 'कर्मभूमि' उपन्यास में भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अभिव्यक्त के रूप में दिखाई पड़ता है। प्रेमचंद का राष्ट्रीय चेतना सिर्फ राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति तक सिमटकर नहीं रह गया है बल्कि उन्होंने राजनीतिक समस्याओं के साथ-साथ तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को स्वाधीनता आंदोलनों से जोड़कर प्रस्तुत किया है। डॉ रामविलास शर्मा के अनुसार- "कर्मभूमि' हिंदुस्तान के स्वाधीनता-आंदोलन की गहराई और प्रसार का उपन्यास है। यह आंदोलन एक जबरदस्त सैलाब की तरह तमाम जनता को अपने अंदर समेट लेता है विद्यार्थी, किसान, अछूत, स्त्रियां, शिक्षक व्यापारी, मजदूर सभी इस के प्रवाह में आगे बढ़ चलते हैं।"18

इस उपन्यास का नायक अमरकांत राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित होकर समाज सेवा के कामों में भाग लेता है। उपन्यास के अन्य पात्र भी किसी न किसी रूप में इस आंदोलन का हिस्सा बनते हैं। और उपन्यास के अंत में सामूहिक क्रांति की विजय के साथ सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन का केंद्र बन जाता है। अमरकांत के प्रोफ़ेसर शांति कुमार कहते हैं- "दया और धर्म की बहुत दिनों परीक्षा हुई और यह दोनों हल्के पड़े। अब तो न्याय-परीक्षा का युग है।"19

गबन उपन्यास का पात्र देवीदीन इस संदर्भ में प्रश्न करते हुए पूछता है- "साहब, सच बताओ जब तुम सुराज का नाम लेते हो तो उसका कौन सा रूप तुम्हारी आंखों के सामने आता है? तुम भी बड़ी बड़ी तलब लोगे, तुम भी अंग्रेजों की तरह बंगलों में रहोगे, पहाड़ों की हवा खाओगे, अंग्रेजी ठाट-बाट बनाए घूमोगे? इस सुराज से देश का क्या कल्याण होगा?"20 आज समकालीन संदर्भ में भी देवीदीन द्वारा उठाया गया प्रश्न प्रासंगिक लगता है।

यहां तक आते-आते प्रेमचंद का आदर्शवाद यथार्थवाद में बदल जाता है । उनका मानना है कि राजनीतिक आंदोलन की सफलता के लिए समाज के अंदर की कुरीतियों का अंत होना आवश्यक है इसलिए सामाजिक जागरण जरूरी है। प्रेमचंद को अपने उपन्यास कर्मभूमि के कथा निर्माण में पर्याप्त सफलता मिली है। कथाकार ने बड़ी कुशलता से कथानक के विभिन्न धाराओं को मिलाकर राष्ट्रप्रेम के विशाल रंगमंच पर सभी पात्रों को प्रस्तुत किया है। विश्वंभर नाथ उपाध्याय कर्मभूमि के संदर्भ में लिखते है कि- "सामाजिक सच्चाईयों का जो विवरण और चित्रण प्रेमचंद के उपन्यासों में मिलता है, उनकी विशेषता यह है कि वह हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का कलात्मक प्रतिबिंब है इसलिए उसका स्थाई महत्व है।"20

मुंशी प्रेमचंद राष्ट्रीय आंदोलन को आम जनमानस का आंदोलन मानते हैं। प्रेमचंद आम जनता के निस्वार्थ बलिदान और देश प्रेम को जहां एक तरफ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की धूरी मानते हैं तो वहीं कुछ ऐसे भी लोग हैं जो दोहरे चरित्र के साथ राष्ट्रीय आंदोलन में जुड़ते हैं। ऐसे ही एक पात्र गबन उपन्यास के हैं जिनका नाम सेठ किरोड़ीमल है। एक तरफ तो गरीबों को कंबल बांटते हैं तो दूसरी तरफ मजदूरों के साथ निर्दयता पूर्वक व्यवहार करते हैं। देवीदीन की टिप्पणी इस संदर्भ में बहुत ही महत्वपूर्ण

हो जाती है वह कहता है- "उसे पापी कहना चाहिए, महापापी। दया तो उसके पास से होकर भी नहीं निकली। उसकी जूट की मिल है। मजदूरों के साथ जितनी निर्दयता उसकी मिल में होती है, और कहीं नहीं होती। चरबी मिला घी बेचकर उसने लाखों कमा लिए।... अगर साल में दो-चार हजार दान न कर दे तो पाप का धन पचे कैसे?" 21

गोदान में ऐसे कई पात्र हैं जिन्होंने दिखावे के लिए राष्ट्रवादी गतिविधियों में भाग लेते हैं और जेल जाते हैं किंतु जेल से आने के बाद भी न तो उनमें राष्ट्र के प्रति कोई सहानुभूति होती है और न ही किसानों के प्रति उनके व्यवहार में कोई बदलाव। गोदान उपन्यास की मिस मालती कहती है - "मैं केवल एक बार जेल जाने के सिवा और क्या-जन सेवा की है? और सच पूछिए तो उसे बार मैं भी अपने मतलब से ही गई थी, इस तरह जैसे राय साहब और खन्ना गए थे।"22 अर्थात् कुछ लोगों के लिए जेल जाना व्यक्तिगत फायदे के सिवा और कुछ भी नहीं था।

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन पर लिखी गई कहानियां प्रेमचंद की कलात्मक अभिव्यक्ति का प्रमाण है। इन कहानियों के माध्यम से जहां एक ओर प्रेमचंद झूठे राष्ट्र वादियों की पोल खोलते हैं, तो दूसरी तरफ निष्कपट और निस्वार्थ राष्ट्रप्रेम का पाठ भी पढ़ाते हैं। प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की अनेक कमजोरियों का भी उजागर किया है जिसमें कथनी और करनी में अंतर के साथ-साथ अंग्रेजी शासन व्यवस्था के साथ समझौतावादी नीतियां तथा मानसिक गुलामी है। सन 1930 तक आते-आते प्रेमचंद गांधी जी के समझौतावादी विचार से असहमत होने लगते हैं। इस आंदोलन के आवेग को प्रेमचंद खूब पहचानते हैं। अब प्रेमचंद को गांधी जी के नेतृत्व में भी संदेह पैदा होने लगा था। 7 अप्रैल 1930 को गांधी जी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेने की घोषणा होती है। उधर प्रेमचंद गांधी जी के आंदोलन की असफलता के लिए कार्यकर्ताओं को दोषी ठहरने पर ठेलम-ठाल निबंध में लिखते हैं- "कायदा है, हमसे कोई बात बिगड़ जाती है तो हम एक दूसरे को इल्जाम देकर अपने मन को बहला लिया करते हैं। यह कहता है कि तुम्हारी गलती थी, दूसरा कहता है जी नहीं यह आपकी हिमाकत थी। कांग्रेस में भी आजकल कुछ वैसे ही ठेलम-ठाल हो रही है।"23 इसी निबंध में कार्यकर्ताओं का पक्ष लेते हुए प्रेमचंद आगे कहते हैं- "क्या महात्मा जी ने उस वक्त यह समझा था कि यह सभी देवता हैं? अगर, वह मानव स्वभाव से इतनी बेखबर हैं, तो यह कसूर उनका है, जो एक राष्ट्र के नेता में बहुत बड़ा कसूर हैं।"24

यहां पर प्रश्न उठता है की क्या प्रेमचंद गांधीवाद के साथ खड़े दिखाई देते हैं या उनके विरोध में। मेरा मानना है की महात्मा गांधी और प्रेमचंद दो अलग-अलग किनारा है वास्तविकता यह है कि प्रेमचंद न तो कभी पूरी तरह गांधीवाद में डूबे हुए थे और न ही उनके विरोध में सत्याग्रह कर रहे थे। दोनों राष्ट्रीय आंदोलन के बिंदु पर एक होते दिखाई पड़ते हैं। अर्थात यहां भी प्रेमचंद गांधी के राजनीतिक स्वाधीनता के साथ खड़े दिखाई तो पड़ते हैं। किंतु सत्याग्रह के पद्धति से निराश भी होते हैं।प्रेमचंद के यहां आजादी का मतलब सिर्फ राजनीतिक नहीं था इससे कहीं आगे बढ़कर प्रेमचंद ने मानसिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, संदर्भों में देखा था।

निष्कर्ष

सही अर्थों में कहा जाए तो प्रेमचंद राष्ट्रीय चेतना के धारा के सच्चे कलम के सिपाही थे। उन्होंने न सिर्फ अपने साहित्य में राष्ट्रवाद की चेतना को प्रखर किया बल्कि स्वयं भी स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रुप से सहभागी रहें। प्रेमचंद की राष्ट्रीय चेतना समाज की चेतना से अलग नहीं है। दरअसल समाज और राष्ट्र दोनों एक दूसरे से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए होते हैं ऐसी स्थिति में कोई भी साहित्यकार अपने समय के युगबोध नहीं छोड़ सकता । प्रेमचंद निर्विवाद रूप से सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में युगीन परिस्थितियों एवं देशकाल का चित्रण विस्तृत रूप से किया है। इस संदर्भ में 'जीवन में साहित्य का

स्थान' नाम लेख में वे कहते है कि- 'साहित्यकार बहुधा अपने देश से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव हो जाता है।"25 मैं जानता हूं की 1907 में आई उनकी पहली कहानी संग्रह सोजे वतन से प्रारंभ हुई यात्रा 1936 गोदान तक आते-आते आजादी की लड़ाई के न जाने कितने रंग और मौके आए, किंतु हर उस मौके पर प्रेमचंद कभी भी राजनीति के पीछे चलते हुए नहीं दिखाई पड़ते, बल्कि मसाल लेकर आगे ही रहते हैं।

संदर्भ-संकेत

1-प्रेमचंद और उनका युग: रामविलास शर्मा
2- प्रेमचंद**:**विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता **,** संपादक**:**मुरली मनोहर प्रसाद सिंह**,** रेखा अवस्थी
नोट**:** हरेक कौम का इल्म-ओ-अदब अपने जमाने की सच्ची तस्वीर होता है अब हिंदुस्तान के कौमी खयाल ने बलोगियत(बुद्धिमत्ता) के जीने पर एक कदम और बढ़ाया है और हुब्बे-वतन के जज्बात लोगों के दिलों में उभरने लगे हैं। क्यूंकर मुमकिन था कि इसका असर अदब पर न पड़ता? में चन्द कहानियां इसी अवसर का आगाज है। और यकीन है जूं-जूं हमारे खयाल वसीह(विस्तृत) होते जाएंगे, इसी रंग के लिटरेचर को रोज-अफ्जों (प्रतिदिन बढ़ना) फरोग होता जाएगा।
3: प्रेमचंद और उनका युग: रामविलास शर्मा
4: प्रेमचंद विरासत का सवाल: शिव कुमार मिश्रा
5: प्रेमचंदर रचनावली भाग- 11
6: आलोचना, शताब्दी अंक:22, वर्ष 2005,
7: वहीं
8: प्रेमचंद रचनावली: भाग-12
9: प्रेमचंद रचनावली भाग-13
10: वहीं
11: प्रेमचंद रचनावली भाग-12
12: प्रेमचंद रचनावली भाग 14
13: प्रेमचंद रचनावली भाग-
14: प्रेमचंद रचनावली, भाग- 6
15: प्रेमचंद रचनावली, भाग-3
16: भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की कहानी: प्रेमचंद
17: प्रेमचंद रचनावली
18: प्रेमचंद रचनावली, भाग-5
19: प्रेमचंद रचनावली, वहीं
20: प्रेमचंद रचनावली भाग -5
21:कालातीत और सार्वभौम यथार्थ का चित्रण', कथा सम्राट-प्रेमचंद,उपाध्याय, विशंभरनाथ,भारत सरकार, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय
21: प्रेमचंद रचनावली-5
22**:** प्रेमचंद रचनावली, भाग-6
23: प्रेमचंद रचनावली भाग-9
24: प्रेमचंद रचनावली भाग-9

25: प्रेमचंद रचनावली भाग-7

सहायक-ग्रंथ

1-किसान राष्ट्रीय आंदोलन और प्रेमचंद: वीर भारत तलवार
2-प्रेमचंद साहित्यिक विवेचन: नंद दुलारे बाजपेई
3-भारतीय मुक्ति आंदोलन और प्रेमचंद: सरोज सिंह
4-कहानीकार प्रेमचंद रचना दृष्टि और रचना शिल्प: शिवकुमार मिश्र
5-प्रेमचंद: नरेंद्र कोहली
6-भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की हिंदी साहित्य में अभिव्यक्ति: डॉक्टर सुषमा नारायण
7-भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी साहित्य: शैलेश कुमार उपाध्याय